वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवारों में वृद्धों की स्थिति

डॉ० ज़किया रफत
एसो० प्रो० एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
आर0बी0डी0 स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, बिजनौर

सारांश

वृद्धजन वर्ग समाज की विरासत अर्थात पुरातन परम्पराओं एवं व्यवस्थाओं का पोषण एवं सरंक्षण करते हैं तथा अपने खट्ठे–मीठे अनुभवों से नवीन पीढ़ी का मार्गदर्शन भी करते हैं। पारम्परिक भारत में उन्हें परिवार तथा समाज में उच्च स्थिति प्राप्त थी। संयुक्त परिवार के अन्तर्गत वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त थी परन्तु जैसे–जैसे औद्योगीकीकरण, नगरीकरण व सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होने से संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा और एकाकी परिवारों में वृद्धि के साथ–साथ परिवार के सदस्यों की आर्थिक भागीदारी बढ़ी है। परिवार में वृद्धों की देखभाल एक समस्या बन गयी है। वर्तमान में वृद्धों की हालत बहुत दयनीय हो गयी है। यह चिंता का विषय है। प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य वर्तमान में बिजनौर नगर के परिवारों में वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करना है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
डॉ० ज़किया रफत

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवारों में वृद्धों की स्थिति

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 8–15

Article No. 2
http://anubooks.com
?page_id=581

प्रस्तावना

किसी भी समाज के संगठन एवं विकास में वृद्धजनों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। वृद्धजन वर्ग एक ओर समाज की विरासत अर्थात पुरातन परम्पराओं एवं व्यवस्थाओं का पोषण एवं सरंक्षण करता है तथा दूसरी ओर अपने जीवन के खट्ठे–मीठे अनुभवों की सहायता से नवीन पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है। यह वर्ग समाज के अतीत को वर्तमान से जोड़ने में एक सेतू के रूप में कार्य करता था परन्तु आज वैश्वीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण आदि के कारण जो नवीन मूल्य प्रतिमान विकसित हुए है, उनमें वृद्धजनों का जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो रहा है।

आज अधिकतर देश विकास तथा रोजगार की बात कर रहे हैं परन्तु एक प्रमुख समस्या जो विश्व में खड़ी हो रही है। वह है वरिष्ठ नागरिकों (60+) की बढ़ती जनसंख्या।[1]

विश्व के अनेक भागों में एक ओर पोषण की सुधरती स्थिति, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तथा सभी क्षेत्रों में शिक्षा और संचार माध्यमों की पहुंच और दूसरी ओर स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता तथा चेतना के कारण मृत्यु दर में कमी आयी है और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है।[2] फलस्वरूप वृद्ध जनों की संख्या में वृद्धि हुई है। विश्व में वृद्ध जनों की संख्या 60 करोड़ के करीब है।[3] भारत में 60 वर्ष की आयु को पूरी कर लेने वाले व्यक्तियों को वरिष्ठ नागरिक अथवा सीनियर सिटीजन की संज्ञा दी गयी है। हमारे देश में वरिष्ठ नागरिकों की दो श्रेणियां विद्यमान है, एक (60+) वृद्ध तथा दूसरी तरफ (80+) वयोवृद्ध।[4] भारत में वृद्धजनों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वर्ष 1901 में भारत में वृद्धों की संख्या 12.1 मिलियन थी जो वर्ष 2011 में 103.2 मिलियन हो गयी।[5]

पारम्परिक भारत में उन्हें परिवार तथा समाज में ऊंचा स्थान प्राप्त था। परिवार की पहचान परिवार के सबसे वृद्ध व्यक्ति के नाम से होती थी। सभी प्रकार के निर्णय वृद्ध लोग किया करते थे। धर्म ग्रन्थों द्वारा व्यक्ति को निर्देश प्राप्त था कि अपने माता–पिता की देखरेख करना पुत्रों का धार्मिक तथा सामाजिक दायित्व था।[6] संयुक्त परिवार प्रणाली के अन्तर्गत वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त थी परन्तु जैसे–जैसे औद्योगीकीकरण, नगरीकण व सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई, वैसे ही संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा।[7] वर्तमान में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन होने तथा एकाकी परिवारों में वृद्धि व परिवार के सदस्यों की आर्थिक कार्यों में भागीदारी होने पर वृद्धों की देखभाल एक समस्या बन गयी है।[8] पश्चिमी सभ्यता के कारण छोटे परिवार की लालसा तथा रोजगार के लिए एक जगह से दूसरी जगह पलायन के कारण वृद्धों को अपने परिवार का समर्थन नहीं मिलता तथा उनकी परिवार से दूरी बढ़ जाती है।[9] शिक्षा के प्रसार के कारण युवा महिलाओं में भी फैक्ट्रियों, कार्यालयों व अन्यत्र नौकरी करने के लिए घर से बाहर निकलना और घर से दूर जाना प्रारम्भ कर दिया है। इन नयी परिस्थितियों ने अधिकांश वृद्धों को घर में कुछ समय के लिए नितान्त अकेले रहने के लिए बाध्य कर दिया है। वृद्धों के बीमार होने की दशा में भी उनकी देखभाल के लिए परिवार में युवा सदस्यों की अनुपलब्धता एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आयी है।[10]

इसके अतिरिक्त वृद्धजनों की सबसे बड़ी समस्या उनकी निजता स्वतन्त्रता एवं गतिशीलता को बदस्तूर बनाये रखने की है।[11] बढ़ती आयु के साथ व्यक्ति का भौगोलिक प्रभाव क्षेत्र संकुचित हो जाता

है।[12] जीवन के इस अंतिम पड़ाव की अवस्था में सभी वृद्धजन अपने परिजनों तथा पड़ौसियों, मित्रों आदि पर शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा भावात्मक रूप से अधिक निर्भर होते हैं। अपने परिवेश से घनिष्ठ सम्पर्क वृद्धजनों के लिए अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण होता है। युवा एवं धनवान लोगों की अपेक्षा वृद्ध, अशक्त एवं अल्प आय वाले लोगों के लिए पास–पड़ौस का महत्व अधिक होता है।[13] उनका परिवेश उनके सामाजिक जीवन की धुरी बन जाता है क्योंकि उनके सामाजिक सम्बन्धों का ताना–बाना उनके वास्तविक निवास के आस–पास ही सिमट कर रह जाता है।[14] परन्तु आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में किसी के पास भी समय नहीं है कि वे उनकी भावुकता, पसन्द ना पसन्द तथा स्वास्थ्य समस्याओं को सुने। अतः वे स्वयं को बहुत अकेला अनुभव करते हैं। सामाजिक गतिविधियों से उनकी सहभागिता लगभग समाप्त हो जाती है। पीढ़ी अन्तराल के कारण भी बच्चे बुजुर्गों की बात का विरोध करते है जिससे वे अपने ही घर में पराये हो जाते हैं। वर्तमान समय में होने वाले अनेक सामाजिक परिवर्तनों जैसे आवासीय क्षेत्रों में बढ़ती व्यावसायिक गतिविधियों, नये उत्पाद बेचने वाले मेगा स्टोर्स की चमक–दमक एवं उसमें आधुनिक तकनीकी का प्रयोग उन्हें असहज बना रहा है। भुगतान के नवीन तरीके डेबिट/क्रेडिट कार्ड आदि का प्रयोग करने में वे स्वयं को असमर्थ पाते हैं।[15]

अतः भारत जैसे विकासशील देश में जहां अभी आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण हो रहा है। वृद्धों की हालत खराब हो रही है।[16] इसको दृष्टिगत रखकर भारत सरकार ने उन्हें सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करने के लिए अनेक योजनाएं संचालित की है तथा माता पिता एवं वरिष्ठ नागरिक (देखभाल एवं कल्याण) विधेयक 2007 भी पारित किया है।[17] अनेक गैर सरकारी संगठन भी वृद्धों के हितों के संरक्षण में कार्य कर रहे हैं। परन्तु इस सबके बावजूद भी उनकी स्थिति दयनीय बनी हुई है। अतः वर्तमान विषय की महत्ता को देखते हुए इस पर शोध कार्य किये जाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

उददेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. वृद्धों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. परिवार में वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित जनपद बिजनौर के बिजनौर नगर में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक शोध प्ररचना के अन्तर्गत किया गया है।

निदर्शन

बिजनौर नगर की वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति की सदस्य सूची में से 50 हिन्दू वृद्धों का चयन दैव निदर्शन पद्धति के प्रयोग द्वारा किया गया है। उनसे सूचनाओं का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।

उपलब्धियाँ

अध्ययन की प्रमुख उपलब्धियां निम्नवत् है।

तालिका संख्या–1
उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति

सूचक	संख्या	प्रतिशत
आयु		
60–70	25	50
70–80	15	30
80+	10	20
योग	**50**	**100**
जाति		
सवर्ण	26	52
पिछड़ी	16	32
अनुसूचित	8	16
योग	**50**	**100**
शिक्षा		
उच्च शिक्षित	22	44
अल्प शिक्षित	28	56
योग	50	100
वैवाहिक स्थिति		
विवाहित	33	66
विधुर	17	34
योग	**50**	**100**
परिवार की प्रकृति		
एकाकी	30	60
संयुक्त	20	40
योग	**50**	**100**
निजी आय		
है	27	54
नहीं	23	46
योग	50	100

तालिका संख्या–2

परिवार के सदस्यों का व्यवहार

परिवार का व्यवहार	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	20	40
खराब	30	60
योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों का व्यवहार उनके प्रति अच्छा है। सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उनके परिवार के सदस्यों का व्यवहार उनके साथ खराब है।

तालिका संख्या–3

पारिवारिक निर्णयों में भूमिका

पारिवारिक निर्णयों में भूमिका	संख्या	प्रतिशत
राय ली जाती है	15	30
नहीं ली जाती है	35	70
योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार, पारिवारिक निर्णयों में उनकी राय लेते हैं तथा सर्वाधिक 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार उनकी राय नहीं लेते हैं।

तालिका संख्या–4

भोजन के प्रति संतुष्टिकरण

भोजन से संतुष्टि	संख्या	प्रतिशत
हाँ	22	44
नहीं	28	56
योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 44 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार में मिलने वाले भोजन से संतुष्ट हैं तथा सर्वाधिक 56 प्रतिशत उत्तरदाता भोजन से संतुष्ट नहीं है।

तालिका संख्या–5
बीमारी में परिवार के द्वारा देखभाल

देखभाल करते हैं	संख्या	प्रतिशत
हाँ	13	26
नहीं	37	74
योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि बीमार पड़ने पर 26 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार उनकी देखभाल करते है। सर्वाधिक 74 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार उनकी देखभाल नहीं करते हैं।

तालिका संख्या–6
चिकित्सा करवाने की स्थिति

चिकित्सा करवाते हैं	संख्या	प्रतिशत
हाँ	30	60
न्हीं	20	40
योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार बीमारी में उनकी चिकित्सा करवाते है।

तालिका संख्या–7
रिश्तेदारों के यहां होने वाले उत्सवों में परिवार के साथ भागीदारी

भागीदारी करते है	संख्या	प्रतिशत
हाँ	23	46
न्हीं	27	44
योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि रिश्तेदारों के परिवारों में होने वाले उत्सवों में 46 प्रतिशत उत्तरदाता अपने परिवार के साथ सम्मिलित होते हैं तथा 44 प्रतिशत उत्तरदाता भागीदारी नहीं करते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान में भारतीय समाज में वृद्धों की दशा बहुत दयनीय है। परिवार में सदस्यों का व्यवहार उनके प्रति अच्छा नहीं है। पारिवारिक निर्णयों में उनकी राय नहीं ली जाती है। वे परिवार द्वारा मिलने वाले भोजन से संतुष्ट नहीं है। बीमार पड़ने पर परिवार के सदस्य उनकी देखभाल नहीं करते। लेकिन चिकित्सा करवाते हैं। उनमें से लगभग आधे वृद्ध रिश्तेदारों के उत्सवों में भी सम्मिलित नहीं होते है।

सन्दर्भ

1. यादव, ललन **(2014)**, *''वृद्धाश्रम में निवास करने वाले वृद्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन''* राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 16(1), जनवरी – जून, **84–86**
2. अग्रवाल, उमेश चन्द्र, **(2009)**, *''बढ़ते बुजुर्ग, घटती सुरक्षा''* कुरूक्षेत्र, वर्ष 55 (12) अक्टूबर **2009,** 54
3. वही, **54**
4. द्विवेदी, परेश **(2014)**, *''वृद्धावस्था के विविध आयाम, समस्याएं एवं चुनौतियाँ''*, राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 16 (1), जनवरी–जून, 21–23
5. महापंजीयन और जनगणना, 2011
6. रेडी, पी.एच. **(1996)** *''दि हैल्थ आफ दि एज्ड इन इंडिया''*, हैल्थ ट्रांजीशन रिव्यू, सप्लीमेंट टू वॉल्यूम 6, **234**
7. यादव, के0एन0एस0 **(2011)**, *''एजिंग सम इमरजिंग इश्यूज,''* नई दिल्ली : मानक पब्लिकेशन्स, 6
8. ढिल्लन, परमजीत कौर **(1992)**, *'साइको–सोशल आसपैक्ट्स ऑफ एजिंग इन इंडिया''* नई दिल्ली : कान्सेप्ट पब्लिशिंग, 16
9. गन्डोतरा, वीणा एवं सरजू पटेल **(2011)** *एजिंग इन इन्टरडिसिप्लीनरी अप्रोच''* नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स, 4
10. रेडडी, पी0एच0, पूर्वोक्त, 235
11. द्विवेदी, परेश पूर्वोक्त, 22
12. ओसवाल्ड एफ, हिबर, ए0, वाही एच. डब्ल्यू एंड मोलेनकॉप, एच, (2005), *''एजिंग एंड पर्सन–एनवायरमेन्ट फिट इन डिफ्रेन्ट अरबन नेबरहुड''* यूरोपियन जर्नल आफ एजिंग, वॉल्यूम 2 (2), 88–97
13. वाइल्स, जे0 **(2005)** *''कन्सैपचुएलाइजिंग प्लेस इन दि केयर आफ ओल्डर प्यूपिल : दि0 कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ जियोग्राफिकल जेरेण्टोलॉजी''* जर्नल आफ क्लीनिकल नर्सिंग, वॉल्यूम 14 (8बी), 100–1005

14. उमाचरण एवं अन्जू राठौर **(2015)**, *''वरिष्ठ नागरिकों के परिवेश में होने वाले परिवर्तनों की उनके सामाजिक अपवर्जन में भूमिका''* राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 17 (1) जनवरी–जून 2015, 23–26
15. उमाचरण, पूर्वोक्त, 26
16. द्विवेदी, परेश पूर्वोक्त, 22
17. पांडेय, प्रियंवदा **(2015),** *''वृद्ध ग्रामीण महिलाओं की समाजार्थिक स्थिति''*, वर्ष 17(1) जनवरी–जून, 83–85